मेरा ही पार्ट है विश्व का मालिक बनाने का

रात्रिक्लास 2-3-68 ओमशान्ति "आत्म-अभिमानी-भव"

बच्चों को यह बेहद का बाप तो बहुत फैमिलियर लगता होगा। कहते हैं हम तो हर कल्प आता हूं पढ़ाने जैसे टीचर बात करते हैं ना। अभी 2 तुमको राजयोग सिखाया था। इन से पहले तो कृष्ण के लिए समझते थे। अभी पर्क यह सुना है कृष्ण भगवान नहीं शिव भगवानुवाच है। और है यह फैमिलियर। कृष्ण तो हो न सके। वह प्रिन्स है पुनर्जन्म में आते हैं।। यह बाप तो पुनर्जन्म में नहीं आते। कृष्ण को पतित-पावन वा सर्वशक्तिवान कौन कहेंगे। यह है भारत की बड़ी ते बड़ी भूल। वह सुप्रीम टीचर वह पहला नम्बर बच्चा जो पढ़ता है उनका नाम डाल दिया है। बाप कहते हैं मैं इनको भी तुमको भी पढ़ाता हूं। यह जाकर कृष्ण बनेंगे तुम जाकर देवी-देवता बनेंगे। सामने कृष्ण को देख खुश होता हूं। बाप भी कहते हैं कितना बार बनाया है। पार्ट बजाता आता हूं। तुम भी जानते हो 84 जन्म का पार्ट अनगिनत बार बजाया है। मैं कितना तुम बच्चों से फैमिलियर हूं। कल्प2 पढ़ाया है। फिर आकर तुम ही बच्चों को पढ़ाऊंगा। ऐसे फैमिलियर बाप को भूल क्यों जाते हो। कहते बाबा योग नहीं लगता है। आप को हम याद नहीं करते हैं। और कहते कहते भी हो अनेक बार बाप से मिले हैं फिर भी भूल क्यों जाते हो। योग अक्षर छोड़ दो। बाप तो सिर्फ कहते हैं मुझे याद करो। पतित-पावन कह बुलाते भी हो ना। यह तो बहुत ही फैमिलियर है। पतित दुनिया में निमंत्रण देते हो आकर पावन बनाओ। हमारी सेवा करो। फिर ऐसे बाप को याद नहीं कर सकते हैं। वह लव रिगार्ड नहीं रहता। ऐसे बाप को हम भूल कैसे सकते! जिसमानी फैमिलियर हर जन्म बदलते हैं। बहुतों से फैमिलियर होते2 बाप को भूल गये हो। बाप आते हैं कल्प बाद। हिस्ट्री रिपीट तो जरूर होनी ही है। सिर्फ कृष्ण का नाम डालने से कुछ नहीं समझते हैं। अभी तुम समझते हो वह सब फाल्तू ही सुना। सिर्फ सुनते रहे। बकहते हैं बाप ने राजयोग सिखाया था। सिर्फ सुनने से ही सीख सकेंगे क्या। है तो ड्रामा। परन्तु भूल कितनी है। यह है एकज भूल। ऋषि-मुनि शंकराचार्य आद तुम्हारे आगे कुछ नहीं जानते। वहां तुमको तूच्छ बुद्धि कहते। तुम उनको कहते हो। स्वच्छबुद्धि को तूच्छ बुद्धि माथा टेकते हैं। बच्चों को खुशी बहुत होनी चाहिए। कृष्ण से तो कुछ भी मिलता नहीं, मनुष्य तो कोई मुझे नहीं जानते। अगर जाने तो मेरा पार्ट भी जाने। तुम भी अपने पार्ट को नहीं जानते हो। आगे चल कर तुम सब जान जावेंगे। ग्लानी करते2 कितने गिरे हैं। बाप को ठिकर-भितर कच्छ-मच्छ अवतार कह धुस्छाई में डाल दिया है। बाप को हंसी आती है। तुमको भी हंसी आवेगी। जिस बाप ने पढ़ाया उनके बदली पढ़ने वाले का नाम लेते रहे। कितनी भूल है। कृष्णभगवानुवाच भुरली देवे दी है। बच्चे को झुलाते रहते हैं। कृष्ण राजयोग सिखाया फिर कहां गये। क्या हुआ, रिजल्ट कुछ भी नहीं। तो बाप बैठ समझाते हैं बच्चों को तो कितनी खुशी होनी चाहिए। हम विष्णु पुरी कृष्ण पुरी के ही मालिक बनते हैं। सिखलाने वाला का नाम गुम कर दिया है। भल शिव पुरान बनाया है परन्तु उन में ऐसी कुछ बात है नहीं। शिव आकर राजयोग सिखाते हैं नई दुनिया स्थापन करने। बाप को वन्डर लगता है। बच्चे कितने भूलते हैं। बच्चों को भूलाये देती है। क्या बन जाते हैं। तुम कितने कांटे बन पड़े हो। अभी फुल सीजन है लड़ने झगड़ने की। और सभी हैं निधणके। तुम बनते हो धणीके। सारे विश्व का राज्य तुम बच्चों के सिवाय कोई कर नहीं सकता। मेरा ही पार्ट है। तुमको विश्व का मालिक बनाया था। तुम खुद ही इनको नमस्ते पूजा आद करते रहते हो। सत्य नारायण की नर से नारायण बनने की अमर कथा सुनते हो। बाकी फिर शंकर आद कहां से आया। गले में सर्प देख पार्वती ही डर जाये। ऐसी2 बातें सुनाकर मनुष्यों को क्या कर रहे हैं। राम ने वन्दर सेना लो। खेल क्या वन्डरफुल है। मनुष्यों ने बैठ कथायें बनाई हैं। जिसको शास्त्र कहते हैं। है जैसे नावेल। मनुष्य समझते नहीं हैं। तुम कहो तो बिगर पड़ेंगे। यह नास्तिक हैं। शास्त्रों को कुछ नहीं मानते हैं। भक्ति ने गिरे हैं फिर माने क्या। ज्ञान है दिन भक्ति है रात। यह बेहद का वैराग्य है। सन्यासियों को यह कुछ पता नहीं है। यह है पुरुषोत्तम संगम युग। पुरुषोत्तम देवता बनने का वैराग्य है तो तुमको खुशी होनी चाहिए। गुप्त वेष में होने कारण माया चक्कर खुला देती है बाप कहते हैं मैं तुमको हर 5000 वर्ष बाद पढ़ाने आता हूं

हूं। तो बाप साथ जिगरी लव होना चाहिए। विश्व का मालिक सदा सुखी बनाने वाला बाप है। वहां सदा सौभाग्यवती होती है। पहले से ही सा० होता है प्रिन्सेज आने वाली है। बस। दुःख का नाम ही नहीं। अभी तो यहां क्या लगा पड़ा है। जैसे कि मनुष्य गठरों में रहते हैं। बाप आते हैं समझते हैं बच्चों को बहुत वन्डर लगत होगा बाप आया है। खुशी मे सारी दुनिया भूल जानी चाहिए। बाबा हमको लेने आये हैं। आत्मा पतित है जानत नहीं है। बाप समझाते हैं तुम कैसे पतित बने हो अब पावन बनो। भक्ति मार्ग में तुम बार2 कुम्भ के मेले पर भटके हो। बाबा को अनुभव तो है ना। कितने ठंढी में जाते हैं। बाप कहते हैं सिर्फ मुझे याद करो। बाबा कब दुख नहीं देते हैं। प्यार से बच्चे2 कहते रहते हैं। सारी राजधानी स्थापन हो रही है। बाप पढ़ाते हैं तो बच्चों को बहुत खुशी रहनी चाहिए। लिखते हैं बाबा योग में नहीं रह सकते। 5-10-20 मिनट भी याद नहीं कर सकते। क्यों? यह बाबा अन्दर में समझते हैं यह होगा कल्प2 होता है फिर भी समझाता हूं ऐसे 2 करो। मैं तुम्हारा फेमिलियर नहीं हूं? खुशी होती है ना। मैं तुम्हार वुह फेमिलियर हूं। 5000वर्ष बाद आकर तुमको पढ़ाता हूं आकर अपना और रचना का परिचय देता हूं। कितनी वन्डर फुल बातें हैं। फिर भी कोई फरकती कोई डायरेक्ट दे देते हैं। बाप कहते हैं तुम सब हो सीतायें। मैं हूं राम। सब को रावण के जंजीर से छुड़ाने आया हूं। तो अटेन्शन से पढ़ना चाहिए। यह कमाई है सच्ची जन्म-जन्मान्तर की। तो अटेन्शन से करनी चाहिए ना। भगवान कितना ऊंच बनाते हैं। कब भी मिस न करना चाहिए। लेट भी न आना चाहिए। बाबा आवेंगे रथ परसवार हो पढ़ावेंगे बाबा कहते हैं मैं ही आकर राजधानी स्थापन करता हूं। बाकी तो पीछे आते, जाते एड हो जाते हैं। कितनी विशाल बुद्धि और आन्तरिक खुशी होनी चाहिए। अच्छा बच्चों को बापदादा का याद प्यार गुडनाईट। नमस्ते।

3-3568. रात्रिक्लास:-

बाप राजयोग सिखला रहे हैं कहते हैं काम महाशत्रु है इन पर जीत पाने से जगत-जीत बनेंगे। यह ल०ना० जगतीजीत विश्व के मालिक हैं ना। बम्बई में एक मंदिर में प्रदर्शनी हो रही है। आजकल मुदिर में शादी भी होती है। ल०ना० तो पवित्र रहते हैं। तो बाबा लिख भेजी कि तुम कितने पापात्मा हो। भगवानुवाच काम महाशत्रु है। वह आदि मध्य अन्त दुःख देती है। काम पर जीत पाने से जगत जीत ल०ना० बने हैं। उनके मंदिर में फिर शादी आद करते हो कितने पापात्मा हो। राय है हम ब्रह्मा कुमारियां तो भगवानुवाच सुनाते हैं। काम चिक्षा से उतार ज्ञान-चिक्षा पर बिठाते हैं। तुम भ्रष्टाचारी बनाते हो हम श्रेष्ठाचारी बनाते हैं हमको नहीं देते हो। यह शादी आद तो पापात्मा का काम है। भगवान बाप एक है कहे तुम दूसरा करते हो। तमोप्रधान भ्रष्टाचारी बनते रहते हो। बाबा लिख कर भेजी। एक तरफ पापात्मा बनते जाते हो दूसरे तरफ बुलाते हो बाबा हमको पावन बनाओ। अभी पावन बनाने बाप आये हैं उनको हाल नहीं देते हो। पतित बनाने वालों देते हो। भगवानुवाच ·· यह चैरिटी की हाल है तो ट्रस्टीयों को पूछ कर देना चाहिए। तो खयाल आता है हम पत्र लिखें। देखें कोई का कान खुलता है। हाल तो सब जगह बहुत है। हम ज्ञान-चिक्षापर बिठाते हैं, पतित को पावन बनाते हैं यह तो देने में बहुत फायदा है। समझ कर शर्माना चाहिए। किराया भी देते हैं फिर भी देते नहीं हो। लिखना चाहिए तुम पाप का काम करते हो। बुलाते हो पतित-पावन आओ। वह आते हैं पावन बनाने तो फिर तुम स्थान भी नहीं देते हो। कोई निकलेंगे जो समझेंगे यह तो बरोबर पाप है। यह पुरुषोत्तम संगम युग है यह भी किसको मालूम नहीं। जबकि बाप आते पवित्र बनाने। बड़े2 आदमी खास हाल बनाते हैं शादियों के लिए। उनको भी समझाना चाहिए। भगवानुवाच काम महाशत्रु है। और तुम यह हाल इसलिए बनाते हो। यह काम न छोड़ेंगे पाप बनता जावेगा। पुण्य के लिए तो बनाया नहीं। रावण में राज्य में जो कुछ करते हैं पाप ही होता है। लेन, देन सब पाप से ही होता है। पुण्य कैसे होगा। भगवान आव सब पापात्मा का है। दान आद भी पापात्मा को देते हैं। यहां तो तुमको बाप

21 जमो लिडा पदमापति बनाते है अच्छ बच्चो को याद प्यार गुडनाइट